सिख गुरु साहिबान के समय गुरमति संगीत का विकास

Dr. Harjas Kaur
[1]Head & Assocaite Professor, Department of Music, Govt. College, Rupnagar

गुरमति संगीत विश्व की ऐसी संगीत परंपरा है जो अपनी मौलिक गुणों और विशिष्ट शास्त्र सदका विलक्षण परंपरा के तौर पर मूर्तिमान होती है। गुरमति संगीत के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी ने पूर्वकालीन, समकालीन, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक हालातों को सुक्षम ध्यान, गहरे चिंतन और ज्ञान उपरांत, उनके फलसफे को भली– भांति पहचानते एक नवीन और मौलिक अध्यात्मिक धार्मिक चिंतन के नवीन पंथ की स्थापना की जो सिक्ख धर्म के नाम से प्रचलित हुआ। सिक्ख धर्म में वाणी और संगीत के सुमेल को एक विशिष्ट संचार माध्यम के तौर पर स्वीकार्य गया है। श्री गुरु नानक देव जी ने शब्द और संगीत को संयुक्त और सूक्षम रूप में पयोग किया है, जिस को शब्द कीर्तन के रूप में जाना जाता है। शब्द कीर्तन के इस सम्पूर्ण विधि विधान और प्रस्तुति प्रक्रिया को 'गुरमति संगीत' के तौर पर जाना जाता है। गुरमति संगीत का आधार श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी हमारे पास एक प्रामाणिक स्रोत के तौर पर विद्यमान हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में लिखित वाणी में संकेतों, शीर्षकों से गुरमति संगीत के आधारभूत तत्वों की सीमा रेखा प्राप्त होती है। गुरमति संगीत का प्रारम्भ श्री गुरु नानक देव जी की वाणी सृजना के माध्यम से माना जा सकता है।

श्री गुरु नानक देव जी के समय गुरमति संगीत का विकास

श्री गुरु नानक देव जी ने अपने आप को ढाडी, दूत, शायर कहते उस सृष्टिकर्ता के आदेश को सर्व लोक तक संचारित करने के लिए शब्द–कीर्तन को माध्यम बनाया। इस शब्द–कीर्तन में संगीत द्वारा खसम की वाणी को लोगों तक पहुंचाने के लिए मौलिक और विलक्षण रूप में इस्तेमाल किया गया है। आप जी की वाणी में संगीत का खास स्थान है।

श्री गुरु नानक देव जी ने वाणी की प्रस्तुति के लिए संगीत का साथ करने के लिए भाई मर्दाने को अपना संगी चुना। भाई मर्दाना जी गुरमति संगीत परंपरा के संगीत आचार्य हुए हैं। भाई मर्दाना जी उस समय के उच्च कोटी के रबाब वादक थे जिन के रबाब वादन के विषय में भाई गुरदास जी ने कहा है:

– भला रबाब वजायन्दा, मजलस मिरासी मर्दाना॥ (वारां भाई गुरदास, वार 11वीं, पउड़ी 13वीं)

– इक बाबा अकाल रूप दूजा रबाबी मर्दाना॥

दित्ती बाँग निमाजि कर सुन्न समानि होआ जहाना॥

(वारां भाई गुरदास, वार 1वीं, पउड़ी 35वीं)

श्री गुरु नानक देव जी जब शब्द का गान करते तो भाई मर्दाना जी रबाब द्वारा उनकी संगत करते भाई मर्दाना जी ने श्री गुरु नानक देव जी का सब से अधिक साथ निभाया। श्री गुरु नानक देव जी ने आप को बखशीश करते कहा था, 'मर्दान्या जहाँ तेरा वासा, वहां मेरा वासा' श्री गुरु नानक देव जी ने भाई फिरन्दा (जो भाई फेरू के नाम से भी प्रसिद्ध था) से गुरमति संगीत के प्रचार के लिए रबाब

बनवाया। भाई काहन सिंह नाभा अनुसार भाई मर्दाने जी ने भाई फिरन्दा जी से राग विद्या की शिक्षा ली।

श्री गुरु नानक देव जी का भाई मर्दाने को एक साथी के तौर पर चुनना और प्रथम उदासी समय ही भाई मर्दाने के लिए एक विशेष प्रकार का रबाब तैयार करवाना इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि श्री गुरु नानक देव जी ने शब्द और संगीत द्वारा इस लोक को सुधारने की प्रक्रिया का आरम्भ किया। श्री गुरु नानक देव जी की सृजन प्रक्रिया और संगीत के गहरे सम्बन्ध के अनेक प्रमाण उनके जन्म से सबंधित साखियों में उपलब्ध होते हैं:

– मर्दान्या तू तार बजाय॥ शब्द भन्यो किछ हित मे आए॥1

– तब बाबा ने कहा 'मर्दान्या, शब्द चिति करि, तउ बाझु सिर नहीं आवदी'। तबि गुरु बाबे कहा 'मर्दान्या रबाब बजाऐ'।[2]

इन प्रसंगों से स्पष्ट होता है कि श्री गुरु नानक देव जी के वाणी अवतरण समय संगीत एक माध्यम के तौर पर अपने आप ही धवनित होता है। यहाँ शब्द और संगीत अलग–अलग नहीं लगते बल्कि यह वाणी रूप शब्द और संगीत की संयुक्त पेशकारी प्रभु कीर्तन के तौर पर मूर्तिमान हो रही है। इस तरह श्री गुरु नानक देव जी की वाणी सृजन प्रक्रिया और इसकी प्रथम प्रस्तुति गुरमति संगीत परंपरा की उत्पति की उत्पति का केन्द्र और प्रथम स्रोत या बिंदु है। इस प्रक्रिया या प्रस्तुति को भाई मर्दाना जी और उनके रबाब द्वारा श्री गुरु नानक देव जी ने सचेत रूप में साधन–माध्यम के तौर पर अपनाया है। वाणी की यह प्रस्तुति–पेशकारी गुरमति संगीत के परवाह को ओर आगे चलाती है।

श्री गुरु नानक देव जी जब भी कहीं नवीन स्थान पर जाते वहां सर्वप्रथम कीर्तन की ध्वनि गुंजारित करते। इस सम्बन्ध में भी अनेक साखियां उपलब्ध होती हैं। वाणी की यह प्रस्तुति उस स्थान के लोगों को उपदेश देने के लिए की जाती थी तो संचार का माध्यम संगीत ही था। उक्त विशलेषण से स्पष्ट है कि गुरमति संगीत का जन्म श्री गुरु नानक देव जी द्वारा हुआ। श्री गुरु नानक देव जी की वाणी के संगीत प्रबंध के विविध रूपों से यह स्पष्ट है कि आप ने अपनी संगत स्रोत श्रेणी के स्तर पर मानसिकता को मुख्य रख कर संचार की भिन्न–भिन्न संगीतक इकाइयों का प्रयोग किया जो इस तथ्य को ओर भी स्पष्ट करते हैं।

श्री गुरु नानक देव जी ने वाणी के प्रचार और प्रसार के लिए करतारपुर साहिब (जो आज कल पाकिस्तान में है) को कीर्तन केंद्र के तौर पर स्थापित किया। इसकी महिमा सम्बन्धित श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कहा है:

– करतार पुरि करता वसै संतन कै पास॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना 816)

करतारपुर में प्रातः काल शाम गुरबानी कीर्तन किया जाता था जिस बारे भाई गुरदास जी ने भी कहा है:

– सोदरु आरती गावीऐ अमृत वेले जापु उचारा॥ गुरमुखि भार अथरबण हारा॥

(वारां भाई गुरदास, वार 38वीं, पउड़ी 9वी)

शब्द की प्रस्तुति का एक महत्त्वपूर्ण और मुख्य तत्त्व राग है। श्री गुरु नानक देव जी ने सिरी, माझ, गउड़ी, आसा, गुजरी, वडहंस, सोरठि, धनासरी, तिलंग, सूही, बिलावल, रामकली, मारू, तुखारी, केदारा, भैरउ, बसंत, मलहार, प्रभाती मुख रागों के इलावा गउड़ी गुआरेरी, गउड़ी दक्षिणी, गउड़ी चेती, गउड़ी पूर्वी, गउड़ी पूर्वी दीपकी, आसा काफी, वडहंस दक्षिणी, सूही, मारू दक्षिणी, प्रभाती बिभास, प्रभाती दक्षिणी राग प्रकारों को वाणी गान हित प्रयोग किया जिस से श्री गुरु नानक देव जी की संगीत सम्बन्धित सूक्षम सूझ का अंदाजा लगाया जा सकता है।

श्री गुरु नानक देव जी ने 'धुर की वाणी' को लोगों तक पहुँचाने के लिए विभिन्न स्थानों का रटन किया जो चार उदासियों के नाम के साथ जाना जाता है। इन उदासियों के अंतर्गत आप दक्षिण भारत भी गए और वहाँ की संस्कृति, आचार, व्यवहार, भाषा और संगीत का अध्ययन किया। श्री गुरु नानक देव जी ने दक्षिण भारत के रागों को भी अपनी वाणी के गान के लिए प्रयोग किया। गुरु नानक वाणी के रागों के साथ लिखित 'दक्षिणी' शब्द दक्षिणी संगीत पद्धति का राग सूचक है परन्तु इन रागों का दक्षिणी पद्धति के राग होने सम्बन्धित विद्वानों में मत भेद पाए जाते हैं परन्तु श्री गुरु ग्रंथ साहिब में लिखित शीर्षक 'रामकली दक्षिणी महल्ला' इस बात का संकेत है कि यह दक्षिणी पद्धति का राग है। क्रियात्मक तौर पर इन रागों के स्वरूप भी केवल दक्षिणी संगीत पद्धति में ही पाए जाते हैं, उत्तरी भारतीय संगीत में नहीं। इस लिए इन रागों को दक्षिणी पद्धति के राग मानना ही ज्यादा उचित है। दक्षिणी पद्धति के रागों के प्रयोग केवल श्री गुरु नानक देव जी ने ही किया है। शब्द पर शीर्षक रूप के तौर पर लिखित 'राग' क्यों जो वाणी को रागों के अधीन गाने का निर्देश है, इस लिए गुरमति संगीत परंपरा में उत्तरी और दक्षिणी दोनों संगीत पद्धतियों के रागों को सम्मान के साथ गाने का आदेश है। तेहरवीं सदी में पंडित शारंगदेव ने इन दोनों पद्धतियों के मेल का प्रयत्न किया परन्तु व्यावहारिक तौर पर संभव न हो सका। श्री गुरु नानक देव जी का दक्षिणी पद्धति के रागों को अपनी वाणी के गान हित प्रयोग करके दोनों संगीत पद्धतियों के बीच की दूरी को खत्म करने में महान योगदान है।

श्री गुरु नानक देव जी ने वाणी की सफल प्रस्तुति हित वाणी और रागों को इन की प्रकृति की आतंरिक सांझ, रसात्मक और भावात्मक स्तर पर जोड़ने की सफल कोशिश की है। आप ने वाणी के गायन के लिए किये गए सनातनी काव्य रूपों के लिए शुद्ध रूपों में मार्गी या स्थापित रागों का प्रयोग किया है। उदाहरण के तौर पर प्रबंध गान शैली के काव्य रूप अष्टपदी का प्रयोग सिरी, माझ, गउड़ी, गुजरी, रामकली, प्रभाती रागों अधीन किया गया है।

श्री गुरु नानक देव जी ने वाणी के संचार की संभावनाओं को बढ़ाने के लिए विभिन्न इलाकों की लोक परंपरा में से विकसित रागों को वाणी के गायन हित प्रयोग किया है। उदाहरण के तौर पर माझ, आसा, आसा काफी, तिलंग, सूही, मारू, तुखारी सौ राग के तौर पर इस्तेमाल किये हैं।

श्री गुरु नानक देव जी वाणी में उपरोक्त रागों में कुछ राग इस तरह के मिलते हैं जो मौसम के साथ सम्बन्धित हैं। इन रागों का गायन भी सम्बन्धित मौसम में हर समय गायन करने की प्रथा है। वाणी का साधारण पाठ करने पर भी राग से सम्बन्धित मौसम का आभास हो जाता है। श्री गुरु नानक देव जी वाणी में दर्ज मौसमी राग बसंत और मलहार रागों में मौसम का वर्णन इस प्रकार है।

राग बसंत

– रुति आइले सरस बसंत माहि॥(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना 1168)

– माहा माह मुमारखी चढ़िआ से सदा बसंत॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना 1168)

राग मलहार

– नानक सावणि जे वसै चहु ओमाहा हुए॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना 1279)

– करउ बिनउ गुर अपने प्रीतम हरि वर आण मिलावै।।

सुण घनघोर सीतलु मनु मोरा लाल रती गुण गावै॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना 1254)

श्री गुरु नानक देव जी के समय राग रागिनी वर्गीकरण, रागांग वर्गीकरण, मेल वर्गीकरण प्रचार में थे। मध्यकाल में प्रचलित राग रागिनी वर्गीकरण आरंभ से ही वाद–विवाद का शिकार रहा है। इन वर्गीकरणों ने भारतीय संगीत में कोई मार्ग प्रदान करने की बजाय अनेक पंथ, वाद विवाद और बखेड़ों को जन्म दिया है। विद्वानों की तरफ से रागों के सरूपों सम्बन्धित कई भ्रम पाए जाते हैं। ऐसे समय गुरू साहिबान ने राग–रागिनी वर्गीकरण के विवाद से निर्लिप्त रहते एक मौलिक और नवीन राग वर्गीकरण सृजन किया। इस नवीन मौलिक प्रबंध को जानने के लिए पहले श्री गुरु नानक देव जी की तरफ से राग सम्बन्धित दर्ज फरमानों को ध्यान देना योग्य प्रतीत होता है।

– केते राग परी सिउ कहीअनि॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना 6)

– इक गावहि राग परीआ रागि न भीजयी॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना 1285)

इन फरमानों से स्पष्ट है कि श्री गुरु नानक देव जी ने राग रागिनी वर्गीकरण को मान्यता नहीं दी। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शीर्षक के तौर पर कहीं भी रागिनी शब्द नहीं मिलता, बेशक रागों के नाम स्त्री वाचक ही क्यों न हों। इस राग वर्गीकरण में रागों का वर्गीकरण सीधे और सरल विधि द्वारा किया गया है। जिस में शुद्ध, सनातनी प्रमुख और प्रचलित रागों को प्रमुख स्वीकार किया गया है और मुख्य रागों अधीन उन के प्रकारों को निर्धारित किया गया है। इस वर्गीकरण में शुद्ध, छायालग, संकीर्ण रागों अनुसार वर्गीकरण किया गया है। उक्त राग वर्गीकरण गुरमति संगीत के लिए लाभदायक और भारतीय संगीत के लिए मार्ग दर्शक है।

श्री गुरु नानक देव जी ने वाणी के संचार की संभावनाओं को सफल करने के हित से कई गान शैलियों का प्रयोग किया। आप ने जहाँ शास्त्रीय गायन शैलियों को 'अंग' रूप में अपना कर इन के साथ सबंधित काव्य रूप में वाणी को 'गुरमति संगीत प्रबंध' के अंतर्गत निबद्ध किया है वहीं लोग अंग की शैलियों को जो अलग–अलग तारा स्थान, जातियों, प्रांतों के मानवीय जीवन में निजी सामूहिक भावों को व्यक्त करने के लिए प्रयोग होती हैं, इनको भी प्रयोग किया। इन लोग रूपों को गुरमति संगीत का अंकुश लगा कर इनके खुलेपन को अनुशासित किया गया है। यह अनुशासनबद्धता इन की भाव अभिव्यक्ति में किसी किस्म की रुकावट नहीं बल्कि विषय की सहज प्रस्तुति में सहाय है। श्री गुरु नानक देव जी की वाणी में अष्टपदी, पदे शास्त्रीय शैलियों के तौर पर और छंत, अलाहुणी, अंजुलि, पट्टी, बारहमाह, सोदर, वार और आरती लोक शैलियां जहाँ लोग मन की अभिव्यक्ति के साथ जुड़ी हैं वहीं यह एक विशिष्ट संगीत की प्रेक्षक हैं। इन लोक रूपों को राग, ध्वनि, रहाउ अति अंकु आदि

संकेतों के साथ प्रस्तुत किया गया है। श्री गुरु नानक देव जी ने धुर की वाणी को संचारित करने के हित में जहाँ काव्य का प्रयोग किया वहां वाणी के भावों को प्रकट करने के लिए संगीत का विशेष उत्तम संगीत प्रबंध सहित भरपूर इस्तेमाल किया और व्यावहारिक कर्म दिया जो निरंतर विकासधीन है।

श्री गुरु अंगद देव जी के समय गुरमति संगीत का विकास

श्री गुरु नानक देव जी की दूसरी ज्योति श्री गुरु अंगद देव जी ने सिरी, माझ, आसा, सोरठि, सूही, रामकली, मारू, सारंग, मलहार 9 रागों अधीन 63 सलोकें के रूप में वाणी की रचना की जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में लिखित है। श्री गुरु अंगद देव जी का राग बसंत सम्बन्धित फरमान है:

– पहिल बसंतै आगमनि तिस का करहु बीचारु॥

नानक सो सालाहीए जि सभसै के आधार॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, पन्ना 791)

गुरमति संगीत में कीर्तन चौकी की परंपरा का विशिष्ट संगीत विधान और मौलिक संगीत रूप है। इनका संस्थागत तौर पर प्रचार में श्री गुरु अंगद देव जी का विशेष योगदान है। भाई काहन सिंह नाभा जी के कथन अनुसार ' अमृत समय पर आसा की वार' गाने का रिवाज भाई लहिना जी (श्री गुरु अंगद देव जी) ने गुरु नानक देव जी की आज्ञा अनुसार करतारपुर में स्थापित की।

श्री गुरु अंगद देव जी ने गुरु नानक द्वारा चलाई कीर्तन परंपरा को पूर्ण निष्ठा और लगन सहित व्यावहारिक रूप में प्रचार करने के लिए दूसरा कीर्तन केंद्र 'खंडूर साहिब' को संस्थागत स्तर पर स्थापित किया जिस बारे श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज भाई सत्ता और वंड जी का फरमान है:

– फेरि वसाया फेर आणि सतिगुरि खाडूरु॥ (श्री गुरु ग्रंथ सहब, पन्ना 967)

इस की साखी भाई गुरदास जी ने भी भरी है:

– गुर नानक हन्दी मुहरि हथि गुर अंगद दी दोही फिरायी॥

दिता छोड़ि करतारपुरु बैठि खडूरे जोति जगाई॥ (वारां भाई गुरदास, वार, पउड़ी 49वीं)

श्री गुरु अंगद देव जी के दरबार में भाई मर्दाने का पुत्र भाई सजादा जिन को रबाब की शिक्षा अपने पिता से प्राप्त हुई। इनके बिना भाई सादू, भाई बादू, भाई रजादा, भाई सजादा और भाई सत्ता, भाई बलवंड प्रात : काल, शाम गुरबानी कीर्तन की परंपरा को कायम रख रहे थे। श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री गुरु नानक देव जी की वाणी की संभाल और व्यावहारिक तौर पर प्रचार में अहम कार्य करने के साथ–साथ गुरमुखी लिपि के विकास और प्रशिक्षण में विशेष योगदान देकर गरमति संगीत को ओर प्रफुलित किया।

गुरु अमरदास जी के समय गुरमति संगीत का विकास

सिक्खों के तीसरे गुरू श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी वृद्ध अवस्था में वाणी की रचना की जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सिरी, माझ, गउड़ी, गउड़ी गुआरेरी, गउड़ी बैरागनि, गउड़ी पूर्वी, आसा, आसा काफी, गुजरी, वडहंस, सोरठि, धनासरी, सूही, बिलावल, रामकली, मारू, भैरउ, बसंत, बसंत हिंडोल, सारंग, मलहार, प्रभाती, प्रभाती बिभास रागों अधीन 907 शब्द और शलोक दर्ज हैं। आप ने अपनी वाणी द्वारा रागों के गुण चितरे हैं जिन को गुरबानी में मान्यता प्राप्त है। उदाहरण के तौर पर:

श्री राग

रागां विचि श्री राग है जो सचि धरे प्यारु॥

सदा हरि सचु मनि वसै निहचल मति अपारु॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, पन्नां 83)

गउड़ी

गउड़ी रागि सुलखणी खसमै चिति करेइ॥

भाणै चलै सतगुरु कै ऐसा सीगारु करेइ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, पन्नां 311)

श्री गुरु अमरदास जी ने वडहंस, बिलावल, रामकली, केदारा, गुजरी, मलहार रागों के भी ध्यान चितरे, इन से गुरू साहिब की महान संगीतक प्रतिभा बारे पता लगता है। श्री गुरु अमरदास जी ने इन रागों अधीन पदे, अष्टपदियें, छंत, सोलहे, वार गायन शैलियों के अंतर्गत वाणी का गायन किया। रामकली राग अधीन ' आनंद साहिब' की रचना महान रचना है जो सिक्ख धर्म में नितनेम की बानियों में से एक और हर समागम के अंत पर इस की छह पउडिओं के गायन करने की प्रथा है।

श्री गुरु अमरदास जी ने गुरमति और संगीत के प्रचार के लिए ' मंजी प्रथा' चलाई। खटिया से भाव गुरु नानक के संगीतमय उपदेशों का प्रचार करने के लिए किसी उच्च जीवन वाले सेवक की नियुक्ति करना। इस तरह श्री गुरु अमरदास जी ने गुरमति और संगीत के बाईस (22) विद्वानों को पंजाब के अलग–अलग क्षेत्रों में भेजा भाव पंजाब के अलग–अलग स्थानों पर बाईस (22) मंजी स्थापित की। श्री गुरु अमरदास जी ने गुरबानी कीर्तन का तीसरा केंद्र गोइन्दवाल साहिब बसायाः

– फेरि वसाया गोइन्दवालु अचरजु खेलु न लखिआ जाई॥

(वारां भाई गुरदास, वार 1वीं, पउड़ी 46वी)

श्री गोइन्दवाल साहिब की महिमा को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इस तरह बयान किया गया हैः

– गोबिंद वालु गोबिंद पुरी सम जलन तीरि बिपास बनायउ

गायउ दुख दूरि बरखन को श्री गुरु मुखु देखि गुरु सुखु पायउ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, पन्ना 1400)

श्री गुरु अमरदास जी के दरबार में भाई सत्ता और बलवंड जी के बिना डंला स्थान के निवासी भाई पांधा और बूल्ला जी रबाब बजाने वाला गुरबानी का कीर्तन करते थे। इन्हों ने कीर्तन की सेवा के साथ–साथ गुरबानी के ग्रंथ लिख कर धर्म प्रचार में विस्तार किया। भाई पांधा जी और बूल्ला जी बारे भाई गुरदास जी ने कहा हैः

– पांधा बूल्ला जाणीऐ गुरबानी गायन लेखारी डले वासी संगति भारी॥

(भाई गुरदास की वारां, वार 1वीं, पउड़ी 6वी)

'कानूने मौसीकी' पुस्तक के कर्त्ता ने पन्ना 306 पर इस का वर्णन किया है कि तीसरी पातशाही श्री गुरु अमरदास जी ने 'सारन्दा' साज का निर्माण किया।3 श्री गुरु अमरदास जी की तरफ से तंती साज देना गुरमति संगीत की अनमोल निधी है।

श्री गुरु रामदास जी के समय गुरमति संगीत का विकास

गुरमति संगीत में चौथे गुरू श्री गुरु रामदास जी का विशेष योगदान है। आप जी ने पूर्व के गुरु साहिबान द्वारा चलाई गुरबानी कीर्तन परंपरा को ओर विकसित किया। श्री गुरु रामदास जी की वाणी सिरी, माझ, गउड़ी, गउड़ी गुआरेरी, गउड़ी बैरागनि, गउड़ी पूर्वी, गउड़ी माझ, आसा, आसावरी, आसा काफी, गूजरी, देवगंधारी, बिहागड़ा, वडहंस, सोरठि, धनासरी, जैतसरी, टोड़ी, बैराड़ी, तिलंग, सूही, बिलावल, रामकली, नट नारायण, नट, गौंड, मालीगउड़ा, मारू, तुखारी, केदारा, भैरउ, बसंत, सारंग, मलहार, कानड़ा, कल्याण, कल्याण भोपाली, प्रभाती, प्रभाती बिभास रागों में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है। श्री गुरु रामदास जी ने वाणी के द्वारा रागों के महत्त्व को मशहूर किया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में लिखित कुछ रागों के सम्बन्ध में श्री गुरु रामदास जी ने कहा हैं:

सोरठि

सोरठि तामि सुहावणी जा हरि नाम ढंढोले॥

गुर पुरखु मनावै आपणा गुरमती हरि हरि बोले॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, पन्ना 642)

बिलावल

हरि उत्तमु हरि प्रभु करि नादु बिलावल राग॥

उपदेस गुरु सुणि मनिआ धुरी मसतकि पूरा भाग॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, पन्ना 849)

श्री गुरु रामदास जी की वाणी सनातनी और लोक काव्य रूपों की प्रेक्षक है, जो अपन–अपना गायन रूप रखते हैं। श्री गुरु रामदास जी ने वाणी की रचना के लिए जहाँ शास्त्रीय संगीत की शैलियों पदे, अष्टपदियें का प्रयोग की वहां घोड़ियाँ, छंत, वार लोक काव्य रूपों, लोक गायन शैलियों का भी प्रयोग किया है। श्री गुरु रामदास जी ने 'पड़ताल' नामक शास्त्रीय शैली जो ताल पर आधारित है को जन्म दिया। भारतीय संगीत में पड़ताल गायन शैली का प्रचार दृष्टिगोचर नहीं होता। पड़ताल गायन शैली अनुसार शब्द की स्थायी तुक में एक ताल इस्तेमाल किया जाता है और अलग अलग अंतरों पर अलग अलग तालों का प्रयोग होने के बावजूद राग एक ही रहता है। पड़ताल शैली गुरबानी संगीत के लिए ही नहीं बल्कि भारतीय संगीत में भी महानता और विलक्षणता की प्रेक्षक है। श्री गुरु रामदास जी की 7 रागों अधीन 19 पड़ताल श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भी दर्ज हैं। लोक काव्य रूप छंत श्री गुरु रामदास जी की वाणी में विशिष्ट उत्तमता की प्रेक्षक है जिनका बाद में 'आसा की वार' में गायन किया जाने लगा। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु रामदास जी द्वारा सूही राग में ऐसे छंतें की रचना मिलती है, जिनकी सिक्ख धर्म में विवाह की रस्म समय, उच्चारण के साथ परिक्रमा लेकर रस्म पूर्ण होती है। सिक्ख जगत में इन छंतों को लांव के साथ संबोधित किया जाता है परन्तु वाणी में लांव शीर्षक नहीं है। इन छंतों की लांव कर्म के साथ आरंभ और समाप्त होती है। आनंद कारज की कीर्तन चौकी में ही श्री गुरु रामदास जी द्वारा राग वडहंस में रचित लोक गायन शैली घोड़ियाँ जो गुरमति संगीत में सदियों से विकसित मौलिक शैली का उत्तम नमूना हैं।

श्री गुरु रामदास जी ने गुरमति संगीत को व्यवहारिक रूप में प्रचार करने के लिए रामदासपुरा या चक्क गुरू की नींव रखी जिस को बाद में 'अमृतसर' कहा जाने लगा। श्री गुरु रामदास जी के अमृतसर वसाने बारे भाई गुरदास जी ने कहा:

– बैठा सोढी पातिसाह रामदास सतगुरु कहावै॥

पूरन ताल खटाया अमृतसर विचि जोत जगावै॥

(वारां भाई गुरदास, वार 1वीं, पउड़ी 1वी)

यह महान कीर्तन केंद्र 'श्री हरिमन्दिर साहिब' और 'दरबार साहिब' के नाम से भी प्रसिद्ध है। गुरमति संगीत में चौकियों अनुसार कीर्तन करने की परंपरा श्री हरिमन्दिर साहिब में ही शुरू हुई थी और इसकी निरंतर ध्वनियाँ आज भी उसी तरह ही चल रही हैं। श्री गुरु रामदास जी के दरबार में भाई सत्ता और भाई बलवंड जी प्रसिद्ध रबाब बजाने वाले प्रात : काल– शाम कीर्तन करते थे।

श्री गुरु अर्जुन देव जी समय गुरमति संगीत का विकास

गुरमति संगीत के विकास में सिक्खों के पाँचवे गुरु श्री गुरु अर्जुन देव जी ने गुरबानी कीर्तन के द्वारा शास्त्रीय संगीत का खूब प्रचार किया। श्री गुरु अर्जुन देव जी ने 30 मुख्य राग सिरी, माझ, गउड़ी, आसा, गुजरी, देवगंधारी, बेहागड़ा, सोरठि, वडहंस, धनासरी, जैतसरी, टोड़ी, बैराड़ी, तिलंग, सूही, बिलावल, गोड, रामकली, नट नारायण, माली गउड़ा, मारू, तुखारी, केदारा, भैरउ, बसंत, सारंग, मलहार, कानड़ा, कल्याण, प्रभाती और 14 राग प्रकार गउड़ी गुआरेरी, गउड़ी चेती, गउड़ी बैरागनि, गउड़ी पूर्वी, गउड़ी माझ, गउड़ी मालवा, गउड़ी माला, आसा काफी, आसावरी, आसावरी सुधंग, देवगंधार, नट, प्रभाती बिभास और बिभास प्रभाती रागों में वाणी का उच्चारण किया जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है। श्री गुरु अर्जुन देव जी ने वाणी के द्वारा रागों के भावों को बयान किया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज कुछ रागों के सम्बन्ध में आप जी ने कहा हैं:

सोरठि

सोरठि सो रसु पीजीए कबहू न फीका होए॥

नानक राम नाम गुण गाईअहि दरगह निरमल सोए॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी, पन्ना 1425)

मारू

गुर कै सबदि अराधीऐ नामि रंगि बैरागु॥

जीते पंच बैराईआ नानक सफल मारू यह राग॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना 1425)

श्री गुरु अर्जुन देव जी ने सब गुरू साहिबान से ज्यादा गुरबानी की रचना की। वाणी के गायन के लिए सब से ज्यादा राग और गायन शैलियों का प्रयोग किया। आप जी ने वाणी के लिए छंत, वार, सोलहे, अंजुलियां लोक काव्य रूपों के इलावा पदे, अष्टपदियें जैसे सनातनी रूपों का भी प्रयोग किया। आप ने पड़ताल गायन शैली का भी खूब प्रचार किया। आप जी की 36 पड़तालें अलग–अलग रागों अधीन श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज हैं।

वर्तमान समय के श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की सम्पादना श्री गुरु अर्जुन देव जी की महान देन है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की सम्पादना का आधार रागात्मक है जो विश्व के धार्मिक ग्रंथों से विलक्षणता का प्रेक्षक है।

श्री गुरु अर्जुन देव जी ने गुरमति संगीत का संस्थागत प्रचलन के लिए 'तरनतारन साहिब' की स्थापना की और श्री हरिमन्दिर साहिब (अमृतसर) को मुकम्मल करवाया। 'आसा की वार' का संपूर्ण गायन श्री गुरु अर्जुन देव जी के दरबार में भाई सत्ता और भाई बलवंत जी से बिना भाई किदार, भाई झांझू और भाई मुकन्द जी जैसे प्रसिद्ध रागी रबाबीयों ने गुरबानी संगीत के द्वारा शास्त्रीय संगीत का खूब प्रचार किया। इनके बारे भाई गुरदास जी ने भी कहा है:

– झांझू अते मुकन्दु है कीरतनु करे हजूरि किदारा॥

(वारां भाई गुरदास, वार 11 पउड़ी 18वीं)

गुरमति संगीत परंपरा में काव्य और संगीत के माहिर भाई सत्ता और भाई बलवंड जी की जोड़ी का विशेष स्थान है। इनकी वाणी वर्तमान समय श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज रामकली की वार (टीको की वार) के रूप में लिखित है। गुरू घर की आध्यात्मिक और संगीतक प्रसिद्धि को सुन कर बादशाह अकबर एक बार कश्मीर से वापस आ रहा था तो श्री गुरु अर्जुन देव जी को मिलने के लिए गया। तानसेन भी उस वक्त बादशाह अकबर के साथ थे। दोनों ने जब शास्त्रीय संगीत के द्वारा आनन्दमयी कीर्तन सुना तो अत्यंत प्रभावित हुए और शास्त्रीय संगीत के उच्च–स्तर की दाद दी। श्री गुरु अर्जुन देव जी के समय भाई सत्ता और बलवंड जी के रूठ जाने कारण गुरमति संगीत प्रथा में एक नयी तबदीली आई। श्री गुरु अर्जुन देव जी ने साधारण सिक्ख संगत को कीर्तन करने का आदेश दिया। इस पर अशिक्षित साधारण सिक्ख संगत में लोक संगीत के तौर पर गुरबानी का गायन शुरू किया गया। इस तरह श्री गुरु अर्जुन देव जी के समय गुरबानी कीर्तन क्रियात्मक तौर पर रागी, रबाबी लोग यानि शिक्षित लोग और अशिक्षित साधारण सिक्ख संगतें दो वर्गों में प्रवेश हुआ। गुरमति संगीत की (शास्त्रीय लोक संगीत) दोनों परंपराओं तब से लेकर अब तक उसी तरह चलीं आ रही हैं।

श्री गुरु अर्जुन देव जी के समय कीर्तन के लिए तंती साज का प्रचलन था। श्री गुरु अर्जुन देव जी सारन्दा साज में विशेष महारत रखते थे। पुरातन साखियों अनुसार प्रचलित है कि भाई मोहन के पास से गोइन्दवाल में पोथियाँ लेने के लिए जब श्री गुरु अर्जुन देव जी गए तो आप ने उनके गृह के बाहर सारन्दे साज के साथ ही कीर्तन किया था। भाई काहन सिंह नाभा अनुसार यह उत्तम स्वर देने वाला तारदार साज है जिसको गज के साथ बजाते है जिस को गुरु अर्जुन देव जी ने अपनी तजवीज के साथ बना कर सिक्ख रागियों को बजाना सिखाया। श्री गुरु अर्जुन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का रागात्मक संकलन द्वारा गुरमति संगीत को आधार प्रदान करके सैद्धांतिक और अनुप्रयुक्त कार्यशीलता में महत्त्वपूर्ण योगदान पाया।

श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी के समय गुरमति संगीत का विकास

सिक्ख लहर के छठे गुरु श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी ने चली आ रही गुरमति संगीत परंपरा को उसी तरह कायम रखा। श्री हरिमन्दर साहिब अमृतसर में चौकियों अनुसार कीर्तन करने की परंपरा शुरू हुई थी। श्री हरिमन्दिर साहिब जी के अंदर शास्त्रीय अंग से चौकी अनुसार गुरबानी कीर्तन की निरंतर ध्वनियाँ चल रही हैं वहां लोक अंग से चौकी साहिब निकालने की परंपरा भी विद्यमान है। इस परंपरा का आरंभ श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी समय शुरू हुआ। इतिहास मुताबिक श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी ड्रोली नगर में गए और वहाँ कुछ समय टिक गए। उनके बाद संगतें गुरु दीदार के लिए व्याकुल

होने लगी। गुरु आदेश अनुसार गुरु साहिब के बाद बाबा बूढ़ा जी ने सिक्ख संगतों को कीर्तन द्वारा गुरु शब्द के साथ जुड़ने के लिए प्रेरणा और उत्साह दिया और समूह संगतों ने मिल कर साधारण धुनों पर कीर्तन किया। गुरमति संगीत में जहाँ रागी रबाबी द्वारा कीर्तन करने की परंपरा थी वहीं दूसरी तरफ साधारण सिक्ख संगतों का भी विशेष योगदान रहा है। श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी के समय शुरू हुई यह चौकी परंपरा 'वारीआं की कीर्तन चौकी' नाम से जानी जाती है। रागत्मक कीर्तन चौकी के इलावा बाबा बूढ़ा जी और भाई गुरदास जी के नेतृत्व में चौकी साहिब की इस कीर्तन परंपरा का आरंभ हुआ।

भाई ब्रिध सब सिक्ख गुरदास॥ गावत चौकी शब्द प्रकास॥

सने सने प्रदच्छन देते॥ शब्द पड़त समझत सुख लेते॥31॥

देखत भहै प्रसन्न बलन्द॥ बन्दत भए श्री हर गोबिंद॥

धन ब्रिध भाई सुभ रीत॥ वरि सुधारसर पर करी प्रीत॥32॥4

भाई बाबक रबाबी के साथ–साथ महान योद्धा भी थे। श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी के दरबार में भाई बाबक अमृत समय पर 'आसा की वार' का कीर्तन करते थे वहां भाई नत्था और अब्दुला जी प्रसिद्ध ढाढी ने सिक्ख सेना में जोश पैदा करने के लिए वीर रस प्रदान करने हित योद्धाओं की गाथाओं का गायन करके गुरु घर की खुशियाँ प्राप्त की।

नथ डढ बजाया अब्दुला हाथ रबाब, अब्दुला ढाढी यश सुनाए॥5

श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी के समय श्री गुरु ग्रंथ साहिब में लिखित ध्वनियों के शीर्षकों अनुसार गाथाओं का गायन किया जाता था। आप जी के दरबार में रागी ढाढियों के इलावा भाई मईआं और लंबा जी दोनों समय शब्द का साधारण कीर्तन करते थे।

श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी ने गुरबानी कीर्तन के प्रचार और प्रसार के लिए 'कीरतपुर साहिब' की स्थापना की जहाँ प्रात : काल–शाम परंपरा अनुसार गुरबानी का कीर्तन किया जाता था। श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी के समय ही गाथाओं के गायन के लिए वीर रस प्रदान करने के हित से सारंगी साज गुरु दरबार में प्रवेश हुआ।

श्री गुरु हरिराय जी, श्री गुरु हरिकृष्ण जी के समय गुरमति संगीत का विकास

सिक्खों के सातवें श्री गुरु हरिराय जी और आठवें श्री गुरु हरिकृष्ण जी परिस्थिति अनुकूल न होने के कारण वाणी की रचना न कर सके परन्तु इन्होंने श्री गुरु नानक देव जी द्वारा चलाई हुई कीर्तन की रीति को बड़े प्यार और सत्कार के साथ कायम रखा।

श्री गुरु तेग बहादुर जी के समय गुरमति संगीत का विकास

सिक्खों के नौवें गुरू श्री गुरु तेग बहादुर जी ने पूरवले गुरुओं द्वारा चली आ रही गुरमति और गुरमति संगीत को ओर सुदृढ़ किया। आप जी ने गउड़ी, आसा, देवगंधार, बेहागड़ा, सोरठि, धनासरी, जैतसरी, टोड़ी, तिलंग, तिलंग काफी, बिलावल, रामकली, मारू, बसंत, बसंत हिंडोल, सारंग, जैजावंती रागों में वाणी का उच्चारण किया। आप जी ने उक्त रागों अधीन 118 शब्दों के लिए जहाँ पदे, अष्टपदी आदि जैसी महान शास्त्रीय गायन शैलियों का प्रयोग किया वहां आप जी के श्री गुरु ग्रंथ साहिब में 57

शलोक दर्ज हैं। इन शलोकों का मंगलाचरण के इलावा दोहा और ख्याल शैली में गायन किया जाता है। श्री गुरु तेग बहादुर जी की वैराग्यमयी वाणी रचना ने गुरमति और गुरमति संगीत को विलक्षणता प्रदान करते कीर्तन के महत्त्व को दिखाया है उदाहरण के तौर पर: –

– सर्व धर्म मानो तिह किए जिह प्रभ कीरति गायी॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना 902)

– कहो नानक सोई नरु सुखीआ राम नाम गुन गावै॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना 200)

श्री गुरु तेग बहादुर जी ने पटना साहिब काशी के इलावा ज्यादा समय आनंदपुर साहिब रह कर बाकी गुरु साहिबान की तरफ से चली आ रही गुरमति संगीत अंतर्गत चौकियों अनुसार कीर्तन को प्रचलित किया जिसके सम्बन्धित हमें कई ऐतिहासिक हवाले मिलते हैं: –

– गावनि लगे शब्द सुखकारी, राग रागनी रुचिर मझारी, बजहि रबाब मृदंग उदारा

(श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पन्ना 4283)

– श्री सतगुर के शब्द उचरिही, बजहि मृदंग रबाब बिसाला, करहि कीर्तन शब्द उजाला।

(श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, पन्ना 4268)

उपरोक्त ऐतिहासिक स्रोतों से ही ज्ञात होता है कि श्री गुरु तेग बहादुर जी के दरबार में रबाब आदि अलग–अलग संगीत वाद्यों का प्रयोग किया जाता था। आप के सम्बन्ध में यह प्रचलित है कि एक बार आप जौनपुर गए। वहां रागी गुरबख्श जी के घर कुछ समय ठहरे और उसे कीर्तन के लिए मृदंग की बखशीश की। मृदंग साज गुरुद्वारा ' संगीत मृदंगावली' जौनपुर में आज भी विशेष सम्मान सहित सुरक्षित पड़ा है।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के समय गुरमति संगीत का विकास

श्री गुरु नानक देव जी की दसवीं ज्योति श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी संत, कवि, संगीतकार के साथ–साथ एक महान वीर योद्धा थे जिन्होंने अनेक कठिनाइओं का सामना करते हुए सिक्ख कौम और संगीत को नयी दिशा प्रदान की। श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी वाणी रचना का संग्रह 'दसम ग्रंथ' है। सिक्ख धर्म में आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के बाद दूसरा विस्तृत ग्रंथ 'दसम ग्रंथ' है। आप जी ने वाणी के लिए रागों का प्रयोग किया जिन में राग सारंग, गउड़ी, भैरउ, रामकली, गुजरी, देवगंधारी, प्रभाती, धनासरी, सूही, तिलंग, माझ आदि राग विशेष हैं। श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी की वाणी और प्रकृति के साथ अंतरीवी सांझ मिलती है। उदाहरण के तौर पर योगियों के प्रिय राग रामकली में योग सन्यास के साथ सम्बन्धित वाणी विशेष है।

रे मन यह बिधि योग्य कमाऊ॥

सिंङी साज अकपट कंठला ध्यान बिभूत चढ़ाऊ॥1॥ रहाउ॥

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी की वाणी में राग, साज और गायन शैलियों के इलावा संगीत के साथ सबंधित मृदंग, नगाड़े, शंख, ढोल, ध्वनि, कोलाहल, राग, गंधर्व, सिंग, डंडी, राग रसालू, तान तरंग, ताल, गीत आदि शब्दों का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने संगीत के साथ सम्बन्धित छंद विशेष तौर पर संगीत छंद के इलावा संगीत छपै छंद, संगीत पधिस्टका छंद, संगीत

बहड़ा छंद, संगीत भुजंग प्रयात, संगीत नाराज छंद, संगीत मधुभार छंद आदि का प्रयोग अपनी वाणी रचना के लिए किया। श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी की श्री सर्व लोह ग्रंथ रचना बारे वाद विवाद है परन्तु उस काल से सम्बन्धित श्री सर्व लोह ग्रंथ में विशाल खजाना है। इस ग्रंथ में राग सारंग, गउड़ी, भैरउ, रामकली, गुजरी, देवगंधारी, प्रभाती, जैतसरी, बैराड़ी, बिलावी, बंगालम, खउखट तयलंगी मंगलन, कुसम, स्याम आदि और राग प्रकार धनासरी अम्बिका, बिलावल मंगल, तेलंग काफी, गउड़ी पूर्वी, गउड़ी बैरागनि, गउड़ी चेती, आसा काफी, नट नारायण, काफी नट, बिहागड़ा, अड़ाना, मालवा, गोंड बिलावल, सारंग काफी आदि का जिक्र मिलता है। श्री सर्ब लोहा ग्रंथ में राग, शैलियों के प्रयोग के इलावा एक विलक्षण संगीत विधान या प्रबंध की सृजना गुरमति संगीत प्रति महान देन है।

श्री आनंदपुर साहिब जो गुरमति संगीत का प्रचार केंद्र था यह श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के समय कीर्तन केंद्र के साथ सिक्ख शक्ति का केंद्र बना। श्री आनंदपुर साहिब में चली आ रही सुबह–शाम गुरबानी कीर्तन की रीति को जारी रखा गया। श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी लाखों तुरकानी फौजों के साथ आनंदपुर साहिब के किले में घिरे रहे परंतु वहां भी अमृत समय पर 'आसा की वार' और शाम के समय कीर्तन दरबार सजाते रहे।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने संगीतक प्रतिभा और परंपरा अनुसार अपने दरबार में 52 कवि रखे थे जो गुरमति अनुसार कविताओं की रचना करते थे। इनके इलावा भाई मद्दू और भाई सद्दू रबाबी जो कि दोनों भाई थे,'आसा की वार' का कीर्तन करते थे। इन भाइयों के बारे भाई संतोख सिंह जी लिखते हैं:

– सदू मद्दू आसा वार कीर्तन करते राग सुधार॥6

– सदू मद्दू दो नहु भ्राता॥ गावे राग सुरने कर गियाता॥

करी बिलावल चौकी चार॥ भोग पाइ अरदास उच्चारण॥7

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने अपनी वाणी के लिए 'ख्याल' गायन शैली का प्रयोग किया। आप द्वारा रचित शब्द' मित्र प्यारे नूं हाल मुरीद दा कहिना' ख्याल पातशाही 10 के शीर्षक नीचे लिखित है। यही शैली आधुनिक समय में ख्याल गायन शैली के नाम से ही संगीत जगत में प्रसिद्ध है। श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी द्वारा संगीत का मूल आधार साज तानपूरा साज का क्रियात्मक रूप में प्रचलन इस बात का साक्षी है कि गुरमति संगीत में तंती साज को पूर्ण रूप से अपनाया गया है। संगीत के विविध रूपों–राग, गायन शैली, साज, संगीत छंद आदि का इस्तेमाल श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी की संगीतक सूझ और गुरमति संगीत प्रति महान योगदान है।

संदर्भ

1 संत दास छिबर, जन्म साखी श्री गुरु नानक शाह की, गुरदेव सिंह (डा., सम्पा.), पन्ना 126
2 वीर सिंह (भाई), श्री गुरु नानक चमत्कार पुरबारध, पन्ना 306
3 तारा सिंह (प्रो.), भूमिका, श्री गुरु अमरदास राग रत्नावली, पन्ना 1
4 19 वारीआं (पहिली चौकी साहिब) प्रकाशक वज़ीर हिंद प्रैस, हाल बाज़ार, अमृतसर, पन्ना 1–2
5 गियान सिंह (गियानी), तवारीख गुरु खालासा, पृष्ठ 294
6 संतोख सिंह (भाई), श्री गुरप्रताप सूरज ग्रंथ, पन्ना 577
7 संतोख सिंह (भाई), श्री गुरप्रताप सूरज ग्रंथ, पन्ना 596